स्फटिक आकाश और खुली उंगलियों वाला हाथ ----------

हवा हवा हवा
सब कुछ को -----
अपने में बांधता हुआ
एक के बाद एक पाश
फिर भी मौन गहराइयों में उतरता हुआ
शांत
पारदर्शी आकाश ।
जल में मछली की तरह
पंख कंपाती
इधर से उधर तक तैर जाती आंख ।
खुली उंगलियों वाला एक हाथ
चाहता है छूना ----
दूर दूरातिदूर
उस पार तैरता हुआ
झीन कपास बादल
जिसके पीछे से अब भी
एक गोल धुंधली आभा झलकती है ।
पोरों से टकरा
स्फटिक की चौड़ी कठोर शिलाएं
टूट कर शीशे की तरह
बिखर जाती है सारी पारदर्शिता ।

क्रमश:–

आकाश शून्य है

तब उसका इतना भार ?
एक ठोस शून्य
शायद यही सत्य है आकाश का ।
हवा के तीखे झोंके ---एक के बाद एक
निर्बाध आते ही जाते हैं ।
किंन्तु वह उपर उठा हुआ हाथ
स्फटिक से बार बार टकरा कर
चोट खा जाता है ।

----- 0000000000----------